

12, 31. — 2) *absprechen, negieren*: स्याप्यते ऽपोक्षते वा Sāh. D. 730. स्यापितमपोक्षितं चापि 329, 5. Viell. caus. wie auch oben u. 1. अपोक्षित. — Vgl. अपोक्षा.

— *अवाप entfernen*: संदेहमवापोक्ष्य Suçr. 1, 344, 11. Es ist wohl संदेहमेवापोक्ष्य zu lesen, wobei aber एव an den Anf. eines Halbverses käme.

— *व्यप auseinander schieben, auseinander treiben, entfernen, weg schaffen, vertreiben, verscheuchen, zunichtemachen*: यदा सोमाप्रूनमिष-वाय व्यपोक्षति Âçv. Çr. 3, 12. व्यपोक्ष्य (Sch.: = विभज्य, विदार्प) शीर्ष-कपाले Taitt. Up. 1, 6, 1. प्रियान्नरात्रामते स्थितान्वह्न्यव्यपोक्ष्य शुद्धातमु-पस्थितो रथी R. 2, 15, 40. 61, 10. व्यपोक्षितुं लोचनतो मुखानिलैरपार-यत्तं किल पुष्पं रजः Sāh. D. 58, 18. यथादित्यः समुद्यन्वै तमः पूर्वं व्यपो-क्षति MBh. 3, 13757. सर्वपापम् 8149. M. 11, 86, 115, 178. एनः 2, 102. ब्र-ह्मरूप्याम् 11, 81. धर्मबुद्धिम् MBh. 14, 2780. विद्वान् Çāk. 52, v. 1. डः खम् KATH. 16, 97. ब्रात्यानां याज्ञनं कृत्वा परेषामत्यकर्म च। अग्निचारमहीनं च त्रिभिः कृच्छैर्व्यपोक्षति (ergänze पापम् oder एनः) || M. 11, 197. व्यपोक्ष्य किल्बिषम् 8, 420. न तु — तपसा शक्यते तद्व्यपोक्षितुम् MBh. 1, 1824. 6206. 16, 280. *vertreiben, heilen* (von Krankheiten) Suçr. 1, 169, 2. 2, 342, 1. 373, 18. 459, 21. विपम् 280, 10. — *med.*: व्यपोक्ष्य शरास्तस्य MBh. 1, 6461. R. 6, 73, 57. व्यपोक्ष्यमानास्ते — ऊताशनम् MBh. 1, 5862.

— *अग्नि überziehen mit, zudecken*: पुरीषेण TS. 5, 2, 7. अङ्गारैः Çat. Br. 1, 2, 13. Kātj. Çr. 2, 4, 38. 25, 10, 16.

— *अव hinabschieben* TS. 5, 3, 4, 6.

— *उह hinauf- oder hinausschieben, — rücken, — schaffen*: उर्ध्वं प्र-ज्ञामुद्गृत्युद्गृह् AV. 11, 1, 10. अङ्गारान् Çat. Br. 1, 2, 4, 4. उत्तुम्के 8, 4, 1. 10, 2, 1, 5. रथानाम् Kātj. Çr. 9, 8, 1. TS. 6, 3, 4, 6. पामून् Kauç. 87. उत्-सङ्गमुद्गृह्य वालम् Bhāg. P. 4, 8, 15. — Hierher und nicht zu वह् gehört vielleicht auch उह 2; vgl. unten u. — वि 7.

— *अभ्युद् hinausschieben, — rücken*: तामुदत्तमभ्युदीकृत् Ait. Br. 3, 13.

— *प्रत्युद् anhäufen*: दक्षिणतः पुरीषं प्रत्युद्गृह्ति Çat. Br. 1, 2, 5, 17.

— *व्युद् 1) auseinander schieben, hinausrücken*: चतुरङ्गलमुभयतो वा-क्ष्यतो व्युद्गृह्ति Çat. Br. 10, 2, 1, 4. 14, 6, 28. अतैः सूतस्य व्युद्गृह्योप-ध्यात् TS. 5, 7, 10, 3. — 2) *auslegen, auskehren*: गार्हपत्यं चेष्यन्पलाश-शाखा व्युद्गृह्ति Çat. Br. 7, 1, 1, 5. 3, 4, 7. 13, 8, 2, 3. Kātj. Çr. 17, 1, 3. 21, 3, 32. एतां अग्निं जिह्वां विनाशयेद्युद्गृह्यात् Çat. Br. 5, 3, 1.

— *उप 1) heranschieben, heranrücken*: उपोक्ष्य रुचिरां नावम् R. 2, 82, 6. मरुद्भनः सज्जमुपोक्ष्य 87, 23. *zulegen, anhäufen*; s. उपोक्ष. — 2) *unter- schieben, einschieben*: पश्चाच्छ्रम्यमुपोक्षति Kātj. Çr. 2, 5, 4. Lātj. 3, 5. कूर्चावधस्ताडुपोक्ष्य 12. — 3) *herbeischaffen, herporbringen*: उपोक्षशब्दा न रथाङ्गनेमयः Çāk. 169. उपोक्षराग Vikr. 26. — 4) *pass. heranrücken* (intrans.), *seinen Anfang nehmen*: उपोक्ष्यामाने (nach West. von वह् mit der Bed. *constituere, assentiri*) व्यूते MBh. 2, 2051. उपोक्ष *nahe gerückt, nahe* H. an. 3, 189. Med. qh. 7. *begonnen*: व्रतिनामुपोक्षतपसाम् Çāk. 106.

— *समुप 1) an sich heranziehen, in sich bergen*: समुपोषु कामेषु bei zurückgehaltenen Wünschen M. 6, 41. — 2) *समुपोक्ष begonnen, entbrannt*: संग्रामे समुपोक्ष R. 2, 73, 29. — Nach West. an beiden Stellen von वह्.

— *निस् herauschieben, wegziehen; bei Seite bringen*: गार्हपत्याडुक्षं भस्म निरुह्य Çat. Br. 12, 4, 2, 2. 3, 4, 7. Çāk. Çr. 2, 8, 8. निरुह्यैतं गर्भम्, निरुह्यैतं, निरुह्यैतं *aus dem Mutterleibe ziehen* Çat. Br. 4, 3, 2, 3. निरुह्य-

माणम् 4. Kātj. Çr. 25, 10, 4. आरादयिं कृव्यादं निरुह्यैतं AV. 8, 2, 9. निरुह-शिरसम् निरुह्यैतं Çat. Br. 10, 3, 5, 8. fgg. 12, 4, 2, 3. निरुह्यैतं प्रमुन्यः Çāk. Çr. 6, 1, 33. निरुह *der da purgirt hat* Suçr. 2, 111, 11. — *caus.* निरुह्यति Jmd purgiren lassen Suçr. 2, 111, 11. 209, 15. 456, 9. 516, 15. निरुह्यति 186, 8.

— *परि act. med. rings anlegen, umhängen; mit angelegter Erde u. dgl. umfassen, befestigen* AV. 19, 37, 3. देवपुरा एव पर्युह्यते TS. 7, 2, 5, 3. 4, 5, 7, 2. Çat. Br. 11, 2, 2, 30. सृजानान्स्मै यज्ञमानाय पर्युह्य TS. 1, 1, 2, 1. मित्रवरूपौ दक्षिणतः पर्युह्यन् Ait. Br. 6, 4. VS. 3, 25, 27. 6, 3. Çat. Br. 3, 3, 22. 6, 1, 17. 9, 4, 2, 8.

— *विपरि (einzeln) befestigen*: एतेमौ वि पर्युह्याम् TS. 2, 5, 8, 2. 6, 6, 4.

— *प्र fortschieben*: प्रोक्ष्य द्रोणकलशम् Kātj. Çr. 9, 3, 14. Nir. 1, 15. VS. 2, 15. *hinwerfen*: कृत्वाग्निं प्रोक्षति (पिष्टानि) Kātj. Çr. 2, 3, 7.

— *प्रति act. med. 1) zurückschieben, — streifen, abstreifen*: विद्युद्भवन्ती प्रति वज्रमौह्यत R. V. 1, 164, 29. वासः Çat. Br. 3, 3, 10. 12, 4, 2, 3. 14, 6, 2, 28. Kātj. Çr. 7, 8, 23. (अङ्गारान्) सुप्रत्युह्यन्प्रत्युह्य Çāk. Çr. 2, 8, 15. — 2) *zurückdrängen, abhalten*: प्रत्यौह्यन्मृत्युममृतेन साकम् AV. 5, 28, 8. 12, 2, 29. प्रत्यौह्यतामग्निं मृत्युनस्मात् VS. 27, 9. Çat. Br. 11, 2, 2, 26. एवमेवेमाः सर्वा प्रजा अहर्गर्गच्छत्य एतं ब्रह्मलोकं न विन्दन्त्यन्तेन हि प्रत्युहाः Kāṇḍ. Up. 8, 3, 2. — 3) *zurückweisen, verschmähen*: न पास्ये न च भोक्ष्ये प्रत्युहं मम भोजनम् R. 5, 31, 14. — 4) *zurückdrängen, hinter sich lassen, übertreffen*: प्रत्युहकर्मकलिलप्रकृति adj. Bhāg. P. 4, 22, 38. — 5) *unterbrechen*: प्रत्युह्येनाग्निषु क्रियाः M. 3, 84. इतिन्द्रहृत्यो प्रतिवा-चमर्थं प्रत्युह्य सैषाभिदधे वयस्याः Naish. 6, 101. — 6) *zuweisen, überge- ben*: पशून् देवताभ्यः प्रत्यौह्यत् Çat. Br. 10, 6, 5, 8 = Bṛh. Âr. Up. 1, 2, 7. Çāk. = प्रतिगमितवान्.

— *वि 1) auseinander schieben, — rücken, — breiten, zertheilen*: सु-चौ Çat. Br. 1, 8, 2, 1. 4. 2, 5, 2, 12. 4, 2, 4, 13. fgg. गुरुपभूतो व्यूह्यति Kātj. Çr. 3, 5, 17. 5, 3, 24. 15, 1, 20. Çāk. Çr. 4, 9, 5. शर्काराः सिक्ता व्यूह्यन् TS. 5, 2, 6, 1. देहात्मानं व्यूह्यत् Çat. Br. 10, 4, 2, 4. 5, 2, 4, 4. ता न व्यूह्यन् नैतद्व्यूह्यानीति यो वै श्रियत ऋतवो ह तस्मै व्यूह्यन्ते 8, 7, 1, 11. TS. 2, 3, 12, 3. (पूयन्) व्यूह्य रश्मिन् Içop. 16 = Bṛh. Âr. Up. 5, 13. — 2) *in Schlachtordnung stellen*: व्यूह्यं वाहिनीम् MBh. 4, 1292. प्रहर्ष-पेदलं व्यूह्य M. 7, 194. R. 6, 16, 16. पाण्डवानां व्यूहम् Bhāg. 1, 2, 3. MBh. 3, 14965. 16370. AK. 3, 4, 47. व्यूहनिव जनीषं तम् R. 2, 3, 21. सूच्या व-ज्रेण चैवैतान्व्यूह्यन् व्यूह्य योधयेत् M. 7, 191. व्यूह्य चाशनसं व्यूह्यम् MBh. 3, 16369. शाल्वा वैकापसं चापि तत्पुं व्यूह्य धिष्ठितः 638. — 3) *auf eine andere Stelle versetzen* (vgl. — सम् 2.): कुर्यासि Ait. Br. 4, 27. ऋचः Çat. Br. 10, 4, 2, 23. Âçv. Çr. 10, 3, 9. Daher heisst eine Feier द्वादशाहो व्यूहच्छ्रदाः Ait. Br. 4, 27. Çat. Br. 4, 5, 9, 1. fgg. — 4) *vertheilen d. h. durch Auseinanderschieben ausgleichen*: उत्तरवेदिम् Kātj. Çr. 5, 3, 22. — 5) *in der Metrik auflösen* (die Vocalverschlingungen): व्यूह्येकाक्षरी-भावान्पदेषूपे संपदे R. V. Prāt. 17, 13. Vgl. व्यूह. — 6) *ordnen, an sei- nen Platz bringen*: व्यूह्यङ्कुरं der seine Rüstung angethan hat AK. 2, 8, 2, 33. H. 763. — 7) *व्यूह auseinandergetrieben, breit* H. 1430. an. 2, 131. Med. qh. 4. वनसि व्यूहे R. 6, 36, 45. उरसि व्यूहे 91. भुजाहरे व्यूहमु-ज्ञातद्वये 114. व्यूहारस्क MBh. 1, 7314. 3, 11719. N. 12, 8. R. 3, 53, 4. Ragh. 1, 13. = संकृत *zusammengetrieben, fest* AK. 3, 4, 47. H. an. Med.